ISSN : 2347-8012 Peer Reviewed Rearch Journal

मीणा जनजाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. संगीता अठ्वाल

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग,

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

निशा मीना

समाजशास्त्र विभाग,

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सारांश

हमारे देश में विभिन्न जनजातियां निवास करती है। इन जनजातियों की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति में कई बदलाव आए है। भारत देश के राजस्थान राज्य में मीणा जनजाति जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे नंबर पर आती हैं।मीणा जनजाति मुख्य रूप से राजस्थान में उदयपुर, जयपुर, दौसा,करौली, डूंगरपुर आदि क्षेत्रों में निवास करती है। जयपुर शहर की मीणा जनजाति शिक्षा का महत्व समझने लगी है और जयपुर में मीणा जनजाति के परिवार अपने परिवार की महिला सदस्यों को शिक्षित कर रहे हैं। इस आधुनिकीकरण के दौर में जयपुर शहर की मीणा जनजाति की महिलाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ा है। शोध पत्र में जयपुर शहर की मीणा जनजातिकी महिलाओं का चयन किया गया है। इन महिलाओं पर आधुनिकीकरण में शैक्षिक स्थिति का अध्ययन शोध पत्र में किया गया है। उत्तरदाताओं से साक्षात्कारअनुसूची द्वारा आंकड़े एकत्रित किए गए हैं। आधुनिकीकरण के दौर में मीणा जनजाति की समाज में शैक्षिक स्थिति का अध्ययन शोध पत्र के अंतर्गत किया गया है।

- **कुंजी शब्द-आधुनिकीकरण, महिला शिक्षा, मीणा जनजाति, अनुसूचित जनजाति**

शिक्षा द्वारा सामाजिक परिवर्तनों के संबंध में किस प्रकार के परिवर्तन आते हैं? शिक्षा एवं आधुनिकीकरण के मध्य प्रश्न उठता है कि शिक्षा किस प्रकार आधुनिकीकरण के द्वारा परिवर्तन ला सकती शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के लिए मुख्य एजेंसी के रूप में देखा जा सकता है। समाज में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा को ऐसी ज्ञान की ज्योति माना गया है, जो अंधकार को मिटाती है।1960 एवं 1970 के दशकों के बाद आधुनिकीकरण के फैलाव के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण समझा जाने लगा। शिक्षा को आधुनिकता के प्रसार के लिए एक मार्ग के उपयोगी उपकरण के रूप में समझा जाने लगा। 1986 की नई शिक्षा नीति ने आधुनिक समाज को अपनाने के लिए अब असाधारण रूप भूमिका निभाई है।रावत, सारस्वत(2000 एवं 2001)[1] मीणा जनजाति के पूजनीय देवता मीन भगवान हैं। जो भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं।मीन का अर्थ होता है मछली। राजस्थान में मीणा जनजाति

...ना को मानती है।ऐसा माना जाता है कि मीणा जनजाति के लोग भूरिया बाबा की झूठी कसम नहीं खाते है। मीणा जनजाति के लोग पहले पशुपालन एवं कृषि कार्यों में अधिक लगे रहते थे, परंतु वर्तमान में औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं तकनीकी शिक्षा के प्रभाव के कारण इनकी संस्कृति में कई तरह के परिवर्तन देखे गए है। वर्तमान में आधुनिकता के कारण मीणा समाज में भी लोग शिक्षित होने लगे है। मीणा जनजाति के लोग भी अब शिक्षा का महत्व समझने लगे है इसीलिए महिलाओं को शिक्षा से वंचित नहीं रखा जाता है। मीणा जनजाति की महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान दिया जाने लगा है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया निरंतर एवं धीमी चलने वाली प्रक्रिया है। एक प्रक्रिया के द्वारा समाज में कई क्षेत्रों में परिवर्तन देखने को मिलते है जैसे-शिक्षा, परिवहन, व्यवसाय, संस्कृति आदि।

लर्नर(1958)[3] ''आधुनिकीकरण से तात्पर्य है कि पश्चिमी मॉडल को स्वीकार करना। बढ़ता हुआ नगरीकरण, बढ़ती हुई साक्षरता, साक्षरता के साथ बढ़ते विभिन्नसाधन, समाचार पत्र, पुस्तकें, रेडियो आदि के प्रयोग द्वारा शिक्षित लोगों के अर्थ पूर्ण विचार विनिमय-सहभागिता को बढ़ाती है।'' डेनियल लर्नर ने आधुनिकीकरण को सामाजिक परिवर्तन की ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है जिसमे विकास एक आर्थिक घटक है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से मीणा जनजाति भी अछूती नहीं रह पाई है। संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार, अनुसूचित जनजातियाँ वे आदिवासी या आदिवासी समुदाय या इन आदिवासियों और आदिवासी समुदायों का भाग या उनके समूह हैं जिन्हें राष्ट्रपति द्वारा एक सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा इस प्रकार घोषित किया गया है। अनुसूचित जनजातियाँ देश भर में, मुख्यतया वनों और पहाड़ी इलाकों में फैली हुई हैं।

दुब्रो दाना(1993)[4] ने बताया है कि भारत में समाज में जटिल स्तरीकरण की प्रणाली सामाजिक श्रेणियों को जन्म देती है। महिला एवं पुरुष में भेदभाव को उत्पन्न करती है। इस अध्ययन में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातिकी महिलाओं की स्थिति पर ध्यान केंद्रित किया गया है। समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में संदर्भित किया जाता है और इन्हें भारतीय संविधान के तहत विशेष रियायतें एवं सुविधाएं प्रदान की जाती है। जागरूकता की कमी के कारण महिलाओं को इन सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। भारत में पितृसत्तात्मक संस्कृति के कारण महिलाओं की स्थिति दयनीय प्रतीत होती है। शोध पत्र में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातिकी महिलाओं की स्थिति का वर्णनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें भारतीय जनगणना के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षा एवं रोजगार के क्षेत्र में इन महिलाओं की स्थिति पुरुषों के मुकाबले बहुत सीमित है। जिन जनजातीय समूह में स्त्री एवं पुरुषों में शिक्षा एवं रोजगार में कम लैंगिक असमानता पाई जाती है वे जनजातीय समूह विकसित माने जाते हैं।

गोयल(2005)[5] नेबताया है कि मध्य प्रदेश की एक आदिम बिरहोर जनजाति की शैक्षिक स्थिति में पिछले डेढ़ दशक में बहुत सुधार देखा गया है। विशेष रूप से महिला साक्षरता में वृद्धि देखी गई है। हालांकि गैर बिरहोरजनजाति की तुलना में बिरहोर जनजाति के बच्चों की विद्यालय छोड़ने की संख्या अधिक है। बिरहोर जनजाति में विद्यालयों में लड़कों का नामांकन लड़कियों की अपेक्षा अधिक पाया गया

है। बिरहोर जनजाति में बड़े भाई बहन अपने छोटे भाई बहनों का ध्यान रखने के लिहाज से विद्यालय में दे नामांकन कटवा लेते हैं। शेट्टी, वी हंस(2015)[6] ने बताया है कि शिक्षा, महिला सशक्तिकरण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि जब एक आदमी शिक्षित होता है तो वह अकेला शिक्षित होता है और जब एक महिला शिक्षित होती है तो वह अपने पूरे परिवार को शिक्षित करती है अर्थात आने वाली पीढ़ियों को भी शिक्षित करती है। शिक्षित महिला द्वारा परिवार, समाज और देश का विकास होता है। शिक्षित महिला में जागरूकता का विकास होता है, जिससे कि वह नई-नई सरकारी नीतियों एवं योजनाओं को समझ सकती है, उनका लाभ उठा सकती है आय के स्रोतों को उत्पन्न कर सकती है।

भट(2015)[7] ने बताया है कि देश के विकास में पुरुषों के साथ-साथ महिलाएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा का महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा के द्वारा महिलाएं जागरूक, सशक्त एवं आत्मनिर्भर होती है। समाज में शिक्षा द्वारा महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं। यदि महिलाओं को समाज एवं परिवार में बेहतर स्थिति प्राप्त करनी है तो उन्हें शिक्षा का महत्व समझना होगा। शिक्षा प्राप्त करके परिवार एवं समाज का विकास करना होगा। शिक्षा के द्वारा लैंगिक असमानता की खाई को कम किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा महिला स्वयं का सर्वांगीण विकास कर सकती हैं।

शैक्षिक संस्थानों का नेतृत्व

मानव विकास रिपोर्ट[8] संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के मानव विकास रिपोर्ट कार्यालय द्वारा प्रकाशित एक वार्षिक मानव विकास सूचकांक रिपोर्ट है। सबसे पहला एचडीआर इंडेक्स 1990 महबूब उल हक नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन द्वारा बनाया गया था। एचडीआर रिपोर्ट के अनुसार शिक्षा एक महत्वपूर्ण योगदान देती है। मनुष्य के जीवन में सही जानकारी प्राप्त करने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। मानव विकास सूचकांक को मापने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति (1986)[9] अशिक्षा को दूरकरने एवं शिक्षा का विकास करने के लिए यह नीति बनाई गई। इस नीति के पश्चात धीरे-धीरे जागरूकता के कारण लोग शिक्षा का महत्व समझने लगे नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा नीति है, जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया। सन् 1986 में जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला नया परिवर्तन है। शिक्षित महिलाओं के लिए आजीविका चलाने के लिए हजारों संसाधन उपलब्ध होते हैं, परंतु अधिकतर अशिक्षित महिलाओं को अपनी आजीविका चलाने के लिए पुरुषो पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

पांचवी पंचवर्षीय योजना (1974-78)[10] इसमें महिलाओंसे संबंधित समस्याओ के समाधान करने एवं कल्याण कारी नीतियों को लाने पर जोर दिया गया ताकि समाज में महिलाओं का स्तर सही करके, उनका सर्वांगीण विकास किया जा सके।

86वां संविधान संशोधन (2002)[11] इसमें संशोधन किया गया, 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिए

...को मुक्त एवं आवश्यक कर दिया गया, जिससे कि इसके पश्चात विद्यालयों में बालिकाओं के ...कन में वृद्धि दर्ज की गई ।

राष्ट्रीय महिला सशक्तीकरण नीति(2001)[12] Ministry fo Women Child Development ...2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित किया गया।

साक्षरता दर[13]

भारत में साक्षरता दर 74.04% है,भारत में साक्षरता के मामले में पुरुष और महिलाओं में काफी अंतर ...जहां पुरुषों की साक्षरता दर 82.14% है वहीं महिलाओं में इसका प्रतिशत केवल 65.46% है। भारत में ...अनुसूचित जनजाति में साक्षरता दर 58.95% है। अनुसूचित जनजातियों में 68.53% पुरुष और 49.35% ...महिलाएं क्रमशः साक्षर हैं। अतः पहले की अपेक्षा महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार हुआ है।

राजस्थान में साक्षरता दर 66.1% है। राजस्थान में महिला 52.1% एवं पुरुष 79.2% साक्षरता दर ...क्रमशः हैं। अनुसूचित जनजाति की साक्षरता दर 44.70 प्रतिशत रही है। जयपुर शहर में अनुसूचित जनजाति ...की कुल जनसंख्या 7.97% है, जिनमें पुरुष 7.98% और महिला 7.96% क्रमशः है ।

उद्देश्य

- आधुनिकीकरण के दौर में मीणा जनजाति की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के बारे में जानना।
- मीणा जनजाति की महिलाओं की शिक्षित महिलाओं की शक्तियों एवं निर्णय लेने की स्वतंत्रता पर अध्ययन ।

अनुसंधान पद्धति

किसी भी समस्या के सही एवं तार्किक परिणाम प्राप्त करने के लिए सीमा को निश्चित करना आवश्यक हो जाता है। शोधार्थी ने सभी तत्वों को ध्यान में रखते हुए भारत देश के राजस्थान राज्य के जयपुर जिले का चयन किया है। जयपुर शहर में मीणा जनजाति की बहुलता हैं। अनुसंधान में गुणात्मक एवं ...त्मक विधि द्वारा कार्य किया गयाहै।

सामाजिक शोध के दौरान यह संभव नहीं हो पाता है कि संपूर्ण समग्र से ही प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया जा सके इसीलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण द्वारा संपूर्ण सामग्री में से कुछ इकाइयों का चयन कर लिया जाता है। निदर्श के चयन में जयपुर शहर की 100मीणा जनजाति की महिलाओं को शामिल किया गया है। उत्तरदाताओं से संबंधित आंकड़े साक्षात्कारअनुसूची द्वारा लिए गए हैं। इसमें केवलशिक्षित विवाहित महिलाओं को शामिल किया गया है।

मीणा जनजाति की महिलाओं की आयु			
क्र.सं.	आयु	आवृति	प्रतिशत
1	18-25	12	12%
2	26-30	30	30%

3	31-35	28	28%
4	36-40	30	30%
योग		100	100%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं में 26 से 30 और 36 से 40 आयु की महिलाओं की संख्या ज्यादा है दोनों ही आयु की मीणा जनजाति की महिलाओं का प्रतिशत 30% है। 18 से 25 आयु की 12 महिलाएं हैं, जो कि कुल में से 12% है। 26 से 30 वर्ष की 30 महिलाएं हैं जोकि 30% है। 31 से 35 वर्ष की 28 महिलाएं हैं जो कि 28% है। 36 से 40 वर्ष की 30 महिलाएं हैं जोकि 30% है। अतः यह पता चलता है कि शिक्षा के कारण वर्तमान में इन महिलाओं की शादी जल्दी नहीं की जाती है, शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

मीणा जनजाति की महिलाओं में शिक्षा

क्र.सं.	आयु	आवृति	प्रतिशत
1	1-12जी	30	30%
2	स्नातक	38	38%
3	स्नातकोत्तर	32	32%
योग		100	100%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 100 में से 38 महिलाएंस्नातक है जोकि 38% है। इन महिलाओं में से सबसे ज्यादा 38 महिलाएं स्नातक पास है। 1 से 12जी तक शिक्षा ग्रहण करने वाली 30 महिलाएं हैं जोकि 30% है। स्नातक 38 महिलाएं कर चुकी है जोकि 38%हैं। स्नातकोत्तर 32 महिलाएं कर चुकी है जोकि 32% हैं। इससे पता चलता है कि मीणा जनजाति की महिलाएं शिक्षा का महत्व समझने लगी है। वे अधिक शिक्षित होने लगी है।

शिक्षा उपरांत रोजगार प्राप्ति में पारिवारिक सदस्यों के सहयोग की भूमिका

क्र.सं.	आयु	आवृति	प्रतिशत
1	पीहर पक्ष	30	30%
2	ससुराल पक्ष	10	10%
3	कोई सहयोग नहीं	60	60%
योग		100	100%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 30 एवं 60% मीणा जनजाति की महिलाओं को शिक्षा उपरांत रोजगार प्राप्ति में पारिवारिक सदस्यों का सहयोग प्राप्त नहीं होता है। यह आंकड़े सबसे ज्यादा पीहर पक्ष द्वारा 30 एवं 30%मीणा जनजाति की महिलाओ को रोजगार प्राप्ति सहयोग प्राप्त होता है।

पक्ष द्वारा 10 एवं 10% मीणा जनजाति की महिलाओ को रोजगार प्राप्ति सहयोग प्राप्त होता हैं जोकि बहुत कम है। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाओं को शिक्षित किया जा रहा है लेकिन उस शिक्षा के उपरांत उनका रोजगार प्राप्ति में सहयोग नहीं दिया जा रहा है क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज में आजीविका संसाधनों के लिए रोजगार कार्य पुरुष करते हैं महिलाओं को बचपन से ही घरेलू कार्य सिखाए जाते हैं। इसीलिए पैसों के लिए आज भी ज्यादातर मीणा जनजाति की महिलाएं पुरुषों पर निर्भर हैं।

शिक्षा ग्रहण करने के बाद वर्तमान स्थिति

क्र.सं.	कार्य	आवृति	प्रतिशत
1	गृहिणी	74	74%
2	कामकाजी महिला	26	26%
योग		100	100%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 74 एवं 74%जनजाति की महिलाएं शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी गृहिणी बनकर घर में जीवन व्यतीत कर रही है। जो कि यह बताता है कि शिक्षा उपरांत भी महिलाओं के जीवन में कुछ बदलाव नहीं आया है। 26 एवं 26% मीणा जनजाति की शिक्षित महिलाएं कार्यकारी जीवन बिता रही है, जो की संख्या में बहुत कम है। इससे स्पष्ट होता है कि मीणा जनजाति की महिलाएं शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत भी अधिक संख्या में घर की चारदीवारी में रहकर ही गृहिणी का जीवन जी रही है।

शिक्षित होकर	केवल गृहिणी बने रहने में स्वयं की सहमति		
क्र.सं.	कार्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	56	56%
2	नहीं	44	44%
योग	100	100%	

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शिक्षित महिलाएं गृहिणी बने रहने में स्वयं की सहमति प्रकट करती है जोकि 56% हैं। यह चौंकाने वाले आंकड़े हैं शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी स्वयं महिलाएं अपनी मर्जी से गृहिणी बन कर जीवन घर की चारदीवारी में बिताना पसंद कर रही है। 44% मीणा जनजाति की शिक्षित महिलाएं घर से बाहर निकल कर आजीविका के लिए कार्य कर रही है जोकि बहुत कम है। अतः स्पष्ट होता है कि महिलाओं की शिक्षा के साथ-साथ इनमें स्वयं के करियर को लेकर जागरूकता लाने की आवश्यकता है। यह महिलाएं अभी भी पारिवारिक रूढ़ियों एवं बंदिशों से बाहर नहीं निकल पाई है। इन्हें बचपन से ही सिखाया जाता है कि इन्हें केवल घर का कार्य करना है, बाहर का कार्य पुरुष करते हैं इसीलिए यह कभी स्वयं के लिए सोचती ही नहीं है कि इन्हें भी बाहर के कार्य करने चाहिए तथा पूरी तरह से पुरुषों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। शिक्षित होने के बावजूद भी यह महिलाएं स्वयं के अधिकारों एवं स्वयं के बारे

में समझने में अक्षम है।

शोध अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि मीणा जनजाति की महिलाओं कोशिक्षित किया जा रहा है। 100 में से 38 महिलाएंस्नातक है जोकि 38: है जोकि संख्या में सबसे अधिक है। कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति में शिक्षा का प्रचलन चल पड़ा है और महिलाओं को अधिक शिक्षित करने पर जोर दिया जा रहा है। उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों में पाया गया कि शिक्षा प्राप्ति के उपरांत रोजगार प्राप्ति में उन्हे पारिवारिक सहयोग नहीं मिल पाता है, एकमात्र कारण पितृसत्तात्मक सोच है क्योंकि पुराने समय से चला आ रहा है कि महिलाएं केवल घरेलू कार्य करने के लिए और पुरुष बाहरी कार्य करने के लिए बने हैं। इसीलिए शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत भी महिलाएं आज भी आधुनिकीकरण के दौर में भी घर की चारदीवारी में घरेलू कार्य कर रही है, उन्हें बाहर कार्य करने की अनुमति नहीं दी जाती है। महिलाओं ने स्वयं ने यह मनोवृति बना रखी है कि शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत भी ससुराल जाकर उन्हें घरेलू कार्य ही करने हैं क्योंकि महिलाओं को बचपन से यही सिखाया जाता है और उनके घर के बाहर निकलने पर रोक टोक लगाई जाती है यदि उन्हें किसी काम से बाहर जाना भी पड़ता है तो पूरी तरह उन्हें पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता है। परिवार के सदस्यों की अनुमति के बिना मीणा जनजाति की महिलाये अपने कार्यों के लिए अकेले बाहर नहीं जा सकती हैं। इस प्रकार यह बिंदु पुरुष वर्चस्वता इंगित करते हैं।

मीणा जनजाति की महिलाओं को आधुनिकीकरण की दौड़ में पढ़ाया तो जा रहा है लेकिन इससे उनके जीवन में बहुत अधिक सुधार नहीं आया है। उन्हें सिर्फ इसीलिए पढ़ाया जा रहा है ताकि उनके लिए योग्य ससुराल मिल सके क्योंकि जब भी विवाह के लिए कन्या देखी जाती है तो उसकी शिक्षा के बारे में पूछा जाता है।

मीणा जनजाति में घरेलू कार्य में निपुणता के साथ-साथ, महिला कितनी शिक्षित है, यह भी देखा जाता है, उसके अनुसार ही ससुराल पक्ष द्वारा कन्या को वर के लिए चुना जाता है।इसी संदर्भ में रास(1961)14 कहते है कि 'मध्यम एवं उच्च वर्ग की बालिकाओं को शिक्षा अभी तक सिर्फ विवाह के उद्देश्य से ही दी जाती है, आजीविका के लिए नहीं।' अध्ययन में पाया गया कि सरकार द्वारा बाल विवाह निषेध कर दिए गए थे इसीलिए मां बाप अपने बच्चों को विश्वविद्यालय, विद्यालय इसलिए भेजते है ताकि उनका समय विवाह होने की आयु तक विधयालय एंव विश्वविद्यालय में गुजर सके। वयस्क होने पर विवाह होने तक मां बाप अपने बच्चों को विद्यालय, विश्वविद्यालय की शिक्षा में व्यस्त रखना उचित समझने लगे। बाल विवाह के अतिरिक्त वयस्क विवाह प्रारंभ होने से 19 से 25 वर्ष तक के बालिकाओं के अवकाश के समय को भरना आवश्यक हो गया और उनके लिए बालिकाओं के विवाह तक उनको व्यस्त रखने का एक उपाय मात्र शिक्षा रह गई। अध्ययन में पाया गया है कि बालिकाओं के लिए उपयुक्त वर मिलने तक शिक्षा जारी रखी गई। आधुनिकीकरण के दौर में सामान्तया अधिकतर कोई भीव्यक्ति मीणा जनजाति में अशिक्षित महिला से विवाह करना पसंद नहीं करता है। यही कारण है कि मीणा जनजाति की महिलाओं को शिक्षित किया जा रहा है।

में समझने में अक्षम है।

शोध अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि मीणा जनजाति की महिलाओं कोशिक्षित किया जा रहा है। 100 में से 38 महिलाएंस्नातक है जोकि 38: है जोकि संख्या में सबसे अधिक है। कहा जा सकता है कि मीणा जनजाति में शिक्षा का प्रचलन चल पड़ा है और महिलाओं को अधिक शिक्षित करने पर जोर दिया जा रहा है। उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों में पाया गया कि शिक्षा प्राप्ति के उपरांत रोजगार प्राप्ति में उन्हे पारिवारिक सहयोग नहीं मिल पाता है, एकमात्र कारण पितृसत्तात्मक सोच है क्योंकि पुराने समय से चला आ रहा है कि महिलाएं केवल घरेलू कार्य करने के लिए और पुरुष बाहरी कार्य करने के लिए बने हैं। इसीलिए शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत भी महिलाएं आज भी आधुनिकीकरण के दौर में भी घर की चारदीवारी में घरेलू कार्य कर रही है, उन्हें बाहर कार्य करने की अनुमति नहीं दी जाती है। महिलाओं ने स्वयं ने यह मनोवृति बना रखी है कि शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत भी ससुराल जाकर उन्हें घरेलू कार्य ही करने हैं क्योंकि महिलाओं को बचपन से यही सिखाया जाता है और उनके घर के बाहर निकलने पर रोक टोक लगाई जाती है यदि उन्हें किसी काम से बाहर जाना भी पड़ता है तो पूरी तरह उन्हें पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता है। परिवार के सदस्यों की अनुमति के बिना मीणा जनजाति की महिलाये अपने कार्यों के लिए अकेले बाहर नहीं जा सकती है। इस प्रकार यह बिंदु पुरुष वर्चस्वता इंगित करते हैं।

मीणा जनजाति की महिलाओं को आधुनिकीकरण की दौड़ में पढ़ाया तो जा रहा है लेकिन इससे उनके जीवन में बहुत अधिक सुधार नहीं आया है। उन्हें सिर्फ इसीलिए पढ़ाया जा रहा है ताकि उनके लिए योग्य ससुराल मिल सके क्योंकि जब भी विवाह के लिए कन्या देखी जाती है तो उसकी शिक्षा के बारे में पूछा जाता है।

मीणा जनजाति में घरेलू कार्य में निपुणता के साथ-साथ, महिला कितनी शिक्षित है, यह भी देखा जाता है, उसके अनुसार ही ससुराल पक्ष द्वारा कन्या को वर के लिए चुना जाता है।इसी संदर्भ में रास(1961)14 कहते है कि 'मध्यम एवं उच्च वर्ग की बालिकाओं को शिक्षा अभी तक सिर्फ विवाह के उद्देश्य से ही दी जाती है, आजीविका के लिए नहीं।' अध्ययन में पाया गया कि सरकार द्वारा बाल विवाह निषेध कर दिए गए थे इसीलिए मां बाप अपने बच्चों को विश्वविद्यालय, विद्यालय इसलिए भेजते है ताकि उनका समय विवाह होने की आयु तक विधयालय एंव विश्वविद्यालय में गुजर सके। वयस्क होने पर विवाह होने तक मां बाप अपने बच्चों को विद्यालय, विश्वविद्यालय की शिक्षा में व्यस्त रखना उचित समझने लगे। बाल विवाह के अतिरिक्त वयस्क विवाह प्रारंभ होने से 19 से 25 वर्ष तक के बालिकाओं के अवकाश के समय को भरना आवश्यक हो गया और उनके लिए बालिकाओं के विवाह तक उनको व्यस्त रखने का एक उपाय मात्र शिक्षा रह गई। अध्ययन में पाया गया है कि बालिकाओं के लिए उपयुक्त वर मिलने तक शिक्षा जारी रखी गई। आधुनिकीकरण के दौर में सामान्तया अधिकतर कोई भीव्यक्ति मीणा जनजाति में अशिक्षित महिला से विवाह करना पसंद नहीं करता है। यही कारण है कि मीणा जनजाति की महिलाओं को शिक्षित किया जा रहा है।

सुझाव-

एक स्त्री ही स्वयं शिक्षित होकर पूरे परिवार को शिक्षित बना सकती है। अतः जनजाति स्त्रियों को अपनी शिक्षा के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा समाज में फैली अनेक बुराईयों, अज्ञानता रूढ़िवादिता, संकीर्णता, को दूर कर शिक्षित बनकर स्वयं आत्मनिर्भर बनना चाहिए।

मीणा जनजाति की महिला स्वयं शिक्षित होगी तो वह अपने पूरे परिवार को शिक्षित बनाने में सक्षम हो पाएगी।

महिलाओं पर पारिवारिक दबाव नहीं रखना चाहिए। महिलाओं की आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी स्थिति पर ध्यान देने के लिए परिवार नियोजन को अपनाना चाहिए।

आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए।

मीणा जनजाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए सरकार द्वारा इन्हें शिक्षा एवं रोजगार के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करवानी चाहिए।

मीणा जनजाति की महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करके जागरूक होकर आधुनिकता से जुड़ना चाहिए।

मीणा जनजाति समाज द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए जिससे कि इन महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आए।

मीणा जनजाति की बालिकाओं को बचपन से ही शिक्षा के प्रति रुचि जाग्रत करनी चाहिए जिससे कि वह अपने सुनहरे भविष्य का निर्माण कर पाए।

अंधविश्वास पर इन महिलाओं को विश्वास करना बंद कर देना चाहिए जिससे कि इनकी समाज में स्थिति सुधर पाए।

संदर्भ सूची

रावत, सारस्वत (2000 एवं 2001) ,मीणा इतिहास-राजस्थान में मीणा, भेर, मेव आदि नामों से ज्ञात मीणा जाति ऐतिहासिक इतिवृत्त 2 संस्करण, प्रकाशक एके शर्मा

Lemer] Denial (1958) +The Passing of Traditional Society : Modernising The Middle East-Newyork-Free Press Publication, Page no. 38

https://hi-vikaspedia-in last Accessed On 22 march 2022-Time 7-00 pm

दुबे, दाना (1993) ,भारत की अनुसूचित जातियों और जनजातियों में शिक्षा और रोजगार में लैंगिक असमानता,जनसंख्या अनुसंधान और नीति समीक्षा 12 (1), 53-70, link.springer.com, 25 मार्च 2022. 8.00 प्रातः

गोयल, अजय (2005) ,मध्य प्रदेश की एक आदिम जनजाति बिरहोर के बीच साक्षरता प्राप्तिः रायगढ़ जिले में एक नमूना सर्वेक्षण से निष्कर्ष,सामाजिक परिवर्तन 35 (1), 62-68, 25 मार्च 2022, 11.00 प्रातः Journals.sagepub.com

6. शेट्टी, वी हंस (2015), महिला सशक्तिकरण और विकास में शिक्षा की भूमिका; पुणे और प्रकाशन, 26 मार्च 2022, 10.00 प्रात: Paper.ssrn.com

7. भट, आर .ए. (2015), भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका, पब्लिकेशन्स, पृ 93

8. https://hdr.undp.org Human Development Reports]last Accessed On 2[illegible] march 2022.Time 7.00 pm

9. https://www.education.gov.in NATIONAL POLICY ON EDUCATION 1986] last Accessed On 28 march 2022-Time 10-00 pm

10. https://niti.gov.in/planningcommission.gov.in/docs/plans/planrel/fiveyr/5th/5planch5.html] last Accessed On 30 march 2022.Time 05.00 pm

11. https://www.india.gov.in The Constitution (Eighty-sixth Amendment) Act, 2002, last Accessed On 30 march 2022.Time 07.00 pm

12. https://wcd.nic.in, last Accessed On 30 march 2022.Time 09.00 pm

13. Schedule Tribe Data, Census of India 2011, Ministry of Home affairs, Govt. of India, Document Available Online On http://www.censusindia.gov.in last Accessed On 24 November 2021.Time 10.00 am

14. रास (1961), भारतीय परिवार अपने शहरी परिवेश में, टोरंटो पब्लिकेशन्स, कनाडा, पृ 208-2[illegible]

◆◆◆